RICERCA, INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH AND INNOVATION
ISSN: 2583-083X
Peer Reviewed Journal, www.rijmri.com

पारंपरिक औषधीय वनस्पतियों का विश्लेषणात्मक एवं जातीय-औषधीय अध्ययन: मारवाड़ क्षेत्र, राजस्थान के विशेष संदर्भ में

बलराम सैनी[1], डॉ. सुमन[2]

[1]शोधार्थी, [2]सह-आचार्य

भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय (JVWU), जयपुर

प्रस्तावना: प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में स्थानीय समुदायों द्वारा उपयोग की जाने वाली औषधीय पादप प्रजातियों तथा उनके पारंपरिक औषधीय उपयोगों का दस्तावेजीकरण करना था। मारवाड़ शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क पर्यावरणीय परिस्थितियों वाला क्षेत्र है, जहाँ स्थानीय समुदायों द्वारा उपलब्ध पादप संसाधनों के उपयोग से संबंधित पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान पीढ़ियों से प्रचलित है। प्रत्येक प्रजाति के वानस्पतिक नाम, प्रयुक्त पादप भाग, पारंपरिक औषधीय उपयोग तथा उपयोग की तैयारी या विधि का अभिलेखन किया गया। उपलब्ध जातीय-वनस्पति साहित्य एवं अन्य प्रामाणिक स्रोतों का उपयोग प्राप्त जानकारी के तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया गया। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मारवाड़ क्षेत्र में पादप संसाधनों से संबंधित पारंपरिक औषधीय ज्ञान विविध एवं व्यापक है। इस ज्ञान का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण इसके संरक्षण तथा भविष्य के औषधीय, पादप-रासायनिक और वैज्ञानिक अध्ययनों के लिए आधार प्रदान कर सकता है।

शब्दसंकेत: औषधीय पादप; जातीय-औषधीय ज्ञान; मारवाड़; राजस्थान; पारंपरिक चिकित्सा; पादप भाग; पारंपरिक उपयोग; जातीय-वनस्पति अध्ययन।

1. परिचय: -

औषधीय पादप पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का महत्वपूर्ण आधार रहे हैं। ग्रामीण एवं स्थानीय समुदाय विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार के लिए उपलब्ध पादपों का पारंपरिक रूप से उपयोग करते हैं। इस ज्ञान में पौधे की पहचान के साथ-साथ प्रयुक्त पादप भाग, औषधीय उपयोग तथा उसकी तैयारी की विधि भी शामिल होती है। राजस्थान का मारवाड़ क्षेत्र शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क पर्यावरण वाला क्षेत्र है, जहाँ स्थानीय समुदायों द्वारा पादप संसाधनों के पारंपरिक उपयोग की परंपरा लंबे समय से प्रचलित है। बदलती सामाजिक परिस्थितियों और प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ते दबाव के कारण इस पारंपरिक औषधीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में मारवाड़ क्षेत्र में उपयोग की जाने वाली औषधीय पादप प्रजातियों का सर्वेक्षण कर उनके वानस्पतिक नाम, प्रयुक्त पादप भाग, पारंपरिक औषधीय उपयोग तथा उपयोग की तैयारी का अभिलेखन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य स्थानीय समुदायों में प्रचलित जातीय-औषधीय ज्ञान का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण करना तथा इसके संरक्षण एवं भविष्य के वैज्ञानिक अध्ययनों के लिए आधार प्रदान करना है।

2. शोध प्रविधि: -

2.1. अध्ययन क्षेत्र:

मारवाड़ को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया क्योंकि यह पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील तथा औषधीय पादप विविधता और पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान से समृद्ध क्षेत्र है। यह राजस्थान के पश्चिमी भाग में स्थित है और इसमें जोधपुर, बालोतरा, फलोदी, बाड़मेर, जालौर, नागौर एवं पाली जिले तथा जैसलमेर के कुछ भाग सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र थार मरुस्थल के शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क भाग में स्थित है, जहाँ रेतीली भूमि, विरल वनस्पति, अत्यधिक गर्मी तथा अल्प एवं अनियमित वर्षा प्रमुख जलवायु विशेषताएँ हैं।

2.2. आँकड़ों के स्रोत (Data Sources):

प्रस्तुत अध्ययन में मारवाड़ क्षेत्र के औषधीय पादपों के पारंपरिक औषधीय उपयोगों के अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आँकड़े क्षेत्रीय सर्वेक्षण, प्रत्यक्ष पादप अवलोकन तथा स्थानीय निवासियों से प्राप्त जानकारी पर आधारित थे। प्राकृतिक वनस्पति क्षेत्रों, कृषि भूमि, चरागाह, रेतीले एवं पथरीले भू-भाग, सड़क किनारे, जल स्रोतों तथा ग्रामीण बस्तियों के आसपास सर्वेक्षण कर औषधीय पादपों एवं उनके उपयोग संबंधी जानकारी संकलित की गई। जातीय-औषधीय जानकारी के लिए ग्रामीण बुजुर्गों, पारंपरिक उपचारकर्ताओं, पशुपालकों तथा घरेलू उपचारों की जानकारी रखने वाले स्थानीय व्यक्तियों से संवाद किया गया। संबंधित पौधों के वानस्पतिक नाम, प्रयुक्त पादप भाग, पारंपरिक उपयोग तथा उपयोग की सामान्य तैयारी या विधि का अभिलेखन किया गया। जानकारी प्राप्त करने से पूर्व प्रतिभागियों की सहमति का ध्यान रखा गया। द्वितीयक आँकड़ों के लिए प्रकाशित जातीय-वनस्पति साहित्य, क्षेत्रीय फ्लोरा, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों एवं अन्य उपलब्ध प्रामाणिक स्रोतों का उपयोग किया गया। इन स्रोतों से प्राप्त औषधीय उपयोग संबंधी जानकारी का प्राथमिक सर्वेक्षण से प्राप्त विवरणों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

2.3. पादप प्रजातियों के औषधीय उपयोगों का अध्ययन:

मारवाड़ क्षेत्र में दर्ज औषधीय पादपों के पारंपरिक उपयोगों की जानकारी स्थानीय समुदायों से संवाद एवं क्षेत्रीय सर्वेक्षण द्वारा संकलित की गई। इसमें ग्रामीण बुजुर्गों, पारंपरिक उपचारकर्ताओं, पशुपालकों तथा घरेलू उपचारों की जानकारी रखने वाले व्यक्तियों को शामिल किया गया। प्रत्येक प्रजाति के वानस्पतिक नाम, प्रयुक्त पादप भाग, पारंपरिक उपयोग तथा उपयोग की तैयारी का अभिलेखन किया गया। अध्ययन में पत्तियों, जड़ों, तनों, छाल, फूल, फल, बीज, गोंद, लेटेक्स तथा संपूर्ण पौधे जैसे विभिन्न प्रयुक्त पादप भागों को दर्ज किया गया। इनके उपयोग में चूर्ण, काढ़ा, रस, लेप, तेल आदि स्थानीय तैयारियों को भी शामिल किया गया।

3. परिणाम एवं चर्चा: -

अध्ययन क्षेत्र में 126 औषधीय पादप प्रजातियों के पारंपरिक एवं जातीय-औषधीय उपयोगों, तथा विभिन्न रोगों में उनकी तैयारी और उपयोग की विधियों का विवरण दर्ज किया गया। प्रस्तुत तालिका स्थानीय समुदायों में प्रचलित पारंपरिक वनस्पति ज्ञान को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करती है। इसमें पत्तियों, जड़ों, तने, छाल, फूलों, फलों, बीजों, कंदों, प्रकंदों, गोंद, लेटेक्स तथा संपूर्ण पौधे का औषधीय उपयोग दर्ज किया गया है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि पत्तियाँ, जड़ें, छाल, फल और बीज अनेक प्रजातियों में औषधीय प्रयोजनों के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रमुख पादप भाग हैं। उदाहरण के लिए, *Azadirachta indica* की पत्तियों का उपयोग त्वचा संबंधी समस्याओं के पारंपरिक उपचार में, *Aegle marmelos* के फल का उपयोग पाचन संबंधी विकारों में तथा *Terminalia arjuna* की छाल का उपयोग हृदय संबंधी समस्याओं के पारंपरिक उपचार में वर्णित है।

इसी प्रकार, *Tinospora cordifolia* के तने, *Curcuma longa* के प्रकंद, *Allium sativum* की कलियों तथा *Phyllanthus emblica* के फलों का भी पारंपरिक औषधीय उपयोग दर्ज किया गया है। इससे पता चलता है कि अध्ययन क्षेत्र में पौधों के विभिन्न अंगों का उपयोग स्थानीय औषधीय ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। तालिका में उल्लिखित पारंपरिक उपयोगों में पाचन तंत्र संबंधी विकार प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। पेट-दर्द, अपच, कब्ज, दस्त, पेचिश तथा आंतों के कृमि जैसी समस्याओं के लिए *Aegle marmelos, Boerhavia diffusa, Cassia fistula, Cuminum cyminum, Terminalia chebula* तथा *Zingiber officinale* जैसी प्रजातियों का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त, *Boerhavia diffusa, Tinospora cordifolia, Phyllanthus amarus* तथा *Azadirachta indica* जैसी प्रजातियों का उपयोग यकृत संबंधी समस्याओं और पीलिया के पारंपरिक उपचारों में वर्णित है।

त्वचा संबंधी रोगों और घावों के उपचार में भी अनेक पादप प्रजातियों का उल्लेख मिलता है। *Aloe vera, Azadirachta indica, Calotropis procera, Lawsonia inermis, Lantana camara* तथा *Tridax procumbens* की विभिन्न तैयारियों का उपयोग घावों, फोड़े-फुंसियों, खुजली, एक्जिमा, जलने और त्वचा की सूजन में पारंपरिक रूप से किया जाता है। कुछ प्रजातियों में पत्तियों या जड़ों का

लेप, पौधों का रस तथा छाल की राख बाहरी प्रयोग के लिए वर्णित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि स्थानीय उपचार पद्धतियों में पौधों से तैयार लेप, रस, अर्क और पुल्टिस का विशेष स्थान है।

इसके अतिरिक्त, तालिका में श्वसन तंत्र, मूत्र तंत्र, हृदय संबंधी समस्याओं तथा मांसपेशियों और जोड़ों के विकारों से संबंधित पारंपरिक उपयोग भी दर्ज हैं। *Ocimum sanctum, Ocimum basilicum, Curcuma longa* तथा *Zingiber officinale* का उल्लेख सर्दी-खाँसी और श्वसन संबंधी समस्याओं में मिलता है। *Tribulus terrestris, Pedalium murex* तथा *Boerhavia diffusa* का उपयोग मूत्र संबंधी समस्याओं में वर्णित है, जबकि *Terminalia arjuna* का उल्लेख हृदय संबंधी पारंपरिक उपचार में मिलता है। *Cissus quadrangularis, Calotropis procera, Martynia annua* तथा *Ziziphus nummularia* की विभिन्न तैयारियों का उपयोग हड्डियों, जोड़ों, सूजन और दर्द से संबंधित लोक-उपचारों में बताया गया है।

पारंपरिक उपचार विधियों की दृष्टि से भी तालिका में विविधता दिखाई देती है। औषधीय पौधों का उपयोग चूर्ण, काढ़े, रस, अर्क, लेप, तेल तथा उबली हुई तैयारियों के रूप में किया जाता है। कुछ पौधों को सब्जी या अन्य खाद्य पदार्थों के रूप में भी उपयोग करने का उल्लेख है। उदाहरण के लिए, *Boerhavia diffusa* की पत्तियों का उपयोग सब्जी के रूप में, *Curcuma longa* के प्रकंद का उपयोग दूध के साथ तथा *Allium sativum* की कलियों का उपयोग पारंपरिक घरेलू तैयारियों में वर्णित है। इससे स्थानीय समुदायों के औषधीय ज्ञान में घरेलू उपचारों और वनस्पति-आधारित तैयारियों की विविधता का पता चलता है।

तालिका 1: अध्ययन क्षेत्र में दर्ज औषधीय पादप प्रजातियों के जातीय-औषधीय उपयोग, प्रयुक्त पादप भागों एवं पारंपरिक उपचार विधियों का विवरण

क्र. सं.	वानस्पतिक नाम	प्रयुक्त भाग	पारंपरिक उपयोग एवं तैयारी
1	*Abutilon indicum G. Don*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से बवासीर में उपयोग किया जाता है।
2	*Acacia nilotica (L.) Willd. ex Delile*	फूल, तने की छाल, टहनियाँ	पीले फूलों को पीसकर पानी के साथ एक्जिमा पर लगाया जाता है। लगभग 50 ग्राम चूर्ण दिन में दो बार पानी के साथ लेने की परंपरा हेपेटाइटिस में वर्णित है। छाल का चूर्ण श्वेत प्रदर में तथा छाल का लेप अल्सर पर लगाया जाता है। दाँत साफ करने और उन्हें मजबूत रखने के लिए कोमल टहनियों का दातून के रूप में उपयोग होता है।
3	*Acacia senegal*	गोंद/लैटेक्स	गोंद को जलने और सूजन वाले स्थानों पर लगाया जाता है। कुछ पारंपरिक पद्धतियों में आंतों की श्लेष्मा झिल्ली की सूजन के लिए इसे मौखिक रूप से भी लिया जाता है।
4	*Achyranthes aspera*	संपूर्ण पौधा, पत्तियाँ	संपूर्ण पौधे की तैयारियों का उपयोग मूत्रवर्धक और कसैले पदार्थ के रूप में किया जाता है। सूखी पत्तियों को पारंपरिक रूप से पाइप में जलाकर धूम्रपान किया जाता है। पौधे की राख को शहद में मिलाकर अस्थमा में उपयोग करने की परंपरा है। इसके अन्य लोक-उपयोग रेबीज और त्वचा रोगों से भी संबंधित हैं।

5	*Aegle marmelos (L.) Correa*	फल	पुराने पेचिश के लिए फल का चूर्ण सौंफ और इसबगोल के साथ लिया जाता है। पके फल का उपयोग पुरानी कब्ज और अपच में भी किया जाता है।
6	*Aerva tomentosa Forsk.*	बीज, फूल	रुई जैसे बीजों को तकियों में भरकर सिरदर्द में राहत तथा गठिया से बचाव के पारंपरिक उपाय के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। फूलों और बीजों का काढ़ा सूजन कम करने के लिए बाहरी रूप से लगाया जाता है।
7	*Ailanthus excelsa Roxb.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से लकवे में उपयोग किया जाता है।
8	*Allium cepa Linn.*	कंद	प्याज के कंद का पेस्ट हल्दी के साथ घावों पर लगाया जाता है। भुने कंद का रस कान में डालने तथा शहद के साथ मिलाकर आँखों में लगाने की परंपरा भी दर्ज है। सरसों के तेल के साथ प्याज का रस साँप के काटने में तथा नौसादर के साथ बिच्छू के डंक पर लगाने के लिए वर्णित है।
9	*Allium sativum Linn.*	कलियाँ	सर्दी-खाँसी में भुनी हुई लहसुन की कलियाँ सोने से पहले खाई जाती हैं; बच्चों को कभी-कभी गुड़ के साथ दी जाती हैं। हृदय संबंधी समस्याओं के लिए दूध में उबालकर लहसुन लेने की परंपरा है। सरसों के तेल में भुने और ठंडे किए गए कुचले लहसुन का उपयोग कान में डालने के लिए भी वर्णित है।
10	*Aloe vera*	पत्तियाँ, तना	कब्ज में पत्तियों को सब्जी के रूप में खाने की परंपरा है। पत्तियों का रस मधुमेह और यकृत संबंधी समस्याओं में उपयोग किया जाता है। पत्तियों तथा तने का रस दर्दयुक्त सूजन वाले स्थानों पर लगाया जाता है।
11	*Amaranthus spinosus Linn.*	पत्तियाँ, जड़ें	पारंपरिक रूप से पेट के अल्सर में उपयोग किया जाता है। पत्तियों और जड़ों का उपयोग रेचक तथा गर्भपातकारी उपायों के रूप में भी दर्ज है।
12	*Amaranthus viridis L.*	बीज	बीजों को पानी में उबालकर छना हुआ तरल निमोनिया में देने की लोक-परंपरा है।
13	*Argemone mexicana Linn.*	लेटेक्स, जड़ें, बीज	फोड़े, त्वचा पर चकत्ते, एक्जिमा और खुजली में पारंपरिक उपयोग दर्ज है। जड़ों की तैयारियाँ बवासीर में उपयोग की जाती हैं तथा जलते बीजों के धुएँ का उपयोग सिरदर्द में किया जाता है। बीजों का चूर्ण साँप के काटने, अस्थमा, सिरदर्द और पेट की समस्याओं के लोक-उपचारों में भी वर्णित है। लेटेक्स का उपयोग गठिया में किया जाता है।

14	*Asparagus racemosus Willd.*	जड़ें, कंद, पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने से संबंधित माना जाता है। पिसी हुई जड़ें गंजे स्थानों और घावों पर मवाद सुखाने के लिए लगाई जाती हैं। नीम के साथ कंद का काढ़ा मधुमेह में लिया जाता है तथा ताजे कंद का पेस्ट पानी के साथ स्तन-दूध बढ़ाने के लिए उपयोग किया जाता है।
15	*Azadirachta indica A. Juss.*	पत्तियाँ, शाखाएँ, टहनियाँ, फल	ताजी पत्तियों को उबालकर छना हुआ पानी बुखार में लिया जाता है और कोमल पत्तियाँ सुबह चबाई जाती हैं। पत्तियों का लेप या उबला पानी त्वचा की जलन, कटने, फोड़े, फुंसियों, फोड़े की गहरी सूजन, ग्रंथियों की सूजन और अल्सर पर लगाया जाता है। सूखे फल का चूर्ण उच्च रक्त शर्करा में उपयोग किया जाता है। पायरिया में ताजी शाखाओं और टहनियों का दातून किया जाता है।
16	*Bauhinia retusa Ham.*	पत्तियाँ, रेशे	पारंपरिक रूप से बुखार में उपयोग किया जाता है।
17	*Bauhinia tomentosa Linn.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से पाचन संबंधी विकारों में उपयोग किया जाता है।
18	*Boerhavia diffusa Linn.*	पत्तियाँ, तना, जड़ें, संपूर्ण पौधा	पत्तियों को पकाकर या सब्जी के रूप में खाया जाता है। इनका उपयोग गुर्दे की पथरी और मूत्रवर्धक उपाय के रूप में भी होता है। पत्तियों और अन्य भागों की तैयारियाँ पाचन संबंधी समस्याओं में प्रयुक्त होती हैं। पीलिया में जड़ का लेप लेने तथा तने के टुकड़ों की माला पहनने की लोक-परंपरा भी दर्ज है।
19	*Boerhavia procumbens Banks ex Roxb.*	जड़ें	जड़ों का काढ़ा आँखों की देखभाल और दृष्टि के लिए पारंपरिक रूप से उपयोग किया जाता है।
20	*Bombax ceiba*	जड़ के सिरे, फूल, जड़ की छाल, तने की छाल, फल	कोमल जड़ के सिरों को नपुंसकता के लोक-उपचार में सब्जी के रूप में खाया जाता है। सूखे फूलों का चूर्ण शहद के साथ अत्यधिक मासिक रक्तस्राव में लिया जाता है। जड़ की छाल का अर्क गिनी कृमि संक्रमण में तथा तने की छाल का अर्क तंत्रिका-टॉनिक और कामोत्तेजक के रूप में वर्णित है। गर्म छाल का लेप सीने में जलन के लिए लगाया जाता है। फल और फूलों का रस प्रसव के बाद गर्भाशय के संकुचन के लिए तथा फूलों का अर्क मूत्र में रक्त आने और श्वेत प्रदर में पारंपरिक रूप से उपयोग किया जाता है।
21	*Brassica nigra*	बीज, तेल	सर्दी-खाँसी में सरसों का तेल नाक में डालने की परंपरा है। लौंग, अजवाइन और मेथी से मिश्रित तेल की मालिश हड्डियों से संबंधित दर्द वाले स्थानों पर की जाती है।

22	*Calotropis gigantea Linn.*	फूल, पत्तियाँ	बुखार में एक फूल को प्रतिदिन पानी के साथ 3–4 दिनों तक लेने की लोक-परंपरा दर्ज है। दाँत-दर्द में जड़ के टुकड़े प्रभावित दाँत पर दबाए जाते हैं। फूलों का चूर्ण पाचन और आमाशय संबंधी समस्याओं में तथा भुनी पत्तियाँ गठिया में उपयोग की जाती हैं।
23	*Calotropis procera (Ait.) R. Br.*	फूल, गाइनोस्टेजियम, जड़ें, लेटेक्स, पत्तियाँ	कृमियों के कारण होने वाले बच्चों के पेट-दर्द में गाइनोस्टेजियम का जलीय अर्क घी और पानी के साथ उपयोग किया जाता है। फूलों की राख शहद के साथ अस्थमा में तथा आँखों के पारंपरिक उपचारों में प्रयुक्त होती है। जड़ की राख मक्खन में मिलाकर एक्जिमा पर लगाई जाती है। लेटेक्स फोड़े और बिच्छू के डंक पर लगाया जाता है; इसका उल्लेख तपेदिक के पारंपरिक उपचार तथा मछलियों के विष के रूप में भी मिलता है। जड़ या पत्तियों की कुछ तैयारियाँ विष-प्रभाव से संबंधित लोक-उपचारों में और फूल पथरी के उपचारों में वर्णित हैं।
24	*Capparis decidua (Forsk.) Edgew.*	जड़ें, जड़ की छाल, तना, फलियाँ, लकड़ी	जड़ का पेस्ट पानी के साथ टाइफाइड में तथा जड़ का चूर्ण यकृत संबंधी समस्याओं में उपयोग किया जाता है। जड़ की छाल का चूर्ण गर्म पानी के साथ अस्थमा और खाँसी में लिया जाता है। तने का लेप गाँठों पर तथा पायरिया और गठिया में लगाया जाता है। लकड़ी का कोयला मांसपेशियों की चोटों पर लगाया जाता है, जबकि फलियों का उपयोग बुखार में पारंपरिक रूप से बताया गया है।
25	*Capparis sepiaria Linn.*	फल, जड़ें	पारंपरिक रूप से सूजन में उपयोग किया जाता है।
26	*Capsicum annuum*	फल	लाल मिर्च के फल का चूर्ण शहद में मिलाकर बिच्छू के डंक पर लगाया जाता है।
27	*Cassia fistula Linn.*	फलियाँ, तना, बीज	उबले बीज पेट-दर्द और पेट की गाँठों के लोक-उपचार में प्रयुक्त होते हैं। फलियों या तने की छाल का काढ़ा पशुओं को रेचक के रूप में दिया जाता है। कब्ज और आंतों के कृमि में भी इसका पारंपरिक उपयोग दर्ज है।
28	*Chloris flagellifera*	जड़ें	गठिया में सूखी या ताजी अदरक और काली मिर्च के साथ तैयार जड़ों का काढ़ा लिया जाता है।
29	*Cicer arietinum L.*	बीज	सर्दी-खाँसी में भुने चने के आटे को दूध और चीनी के साथ मिलाकर सोने से पहले लेने की परंपरा है।

30	*Cissus quadrangularis Linn.*	तना, पर्वसंधियाँ, पत्तियाँ, कोमल प्ररोह	तने की पर्वसंधियों के अर्क का उपयोग मनुष्यों और पशुओं में हड्डी के फ्रैक्चर के उपचार में पारंपरिक रूप से किया जाता है। तने का रस स्कर्वी, मासिक धर्म संबंधी विकार, अत्यधिक रक्तस्राव और नाक से खून आने में प्रयुक्त होता है। तने का लेप अस्थमा, जलने, घाव, विषैले कीटों के काटने और पशुओं के घावों पर लगाया जाता है। सूखी अदरक और काली मिर्च के साथ पत्तियाँ तथा कोमल प्ररोह शरीर-दर्द में उपयोग किए जाते हैं। अन्य लोक-उपयोगों में कृमि संक्रमण, भूख की कमी, अपच, पेट-दर्द, गैस, त्वचा रोग, कुष्ठ रोग, रक्तस्राव, मिर्गी, ऐंठन, खून वाली खाँसी, गाँठें, पुराने अल्सर और सूजन शामिल हैं।
31	*Citrullus colocynthis (L.) Schrad.*	फल	सूखे फल का चूर्ण नमक और पानी के साथ पेट-दर्द में तथा काली मिर्च और सेंधा नमक के साथ कब्ज में उपयोग किया जाता है। फल की राख पानी के साथ अस्थमा में लेने की परंपरा है।
32	*Citrullus lanatus (Thunb.)*	फल	काँच की बोतल में दो वर्ष तक रखा गया फल-रस साँप के काटने के पारंपरिक उपचार में उल्टी उत्पन्न करने के उद्देश्य से दिए जाने का उल्लेख है।
33	*Cleome gynandra Linn.*	पत्तियाँ, बीज, जड़ें	बीजों का काढ़ा और चूर्ण, पत्तियों का रस व लेप तथा सब्जी के रूप में तैयारियाँ खाँसी, सर्दी, बुखार, कान-दर्द, गठिया, सिरदर्द, आंतों के अल्सर, बवासीर, आंतों के कृमि, रतौंधी और त्वचा रोगों में पारंपरिक रूप से उपयोग की जाती हैं। जड़ों की तैयारियाँ बिच्छू के डंक में भी बताई गई हैं। पत्तियों का अर्क कान-दर्द तथा कान से कीड़े निकालने के लिए प्रयुक्त होता है।
34	*Clerodendrum phlomidis*	पत्तियाँ, जड़ें, बीज, टहनियाँ	पत्तियों का रस और लेप, जड़ों का काढ़ा व चूर्ण, बीजों का तेल तथा टहनियाँ उपदंश, गोनोरिया, खसरा, पशुओं के दस्त और कृमि, जोड़ों के दर्द, गठिया, सूजन, शरीर-दर्द, घाव, फोड़े, एक्जिमा, आँखों की सूजन और मोटापे के पारंपरिक उपचारों में उपयोग किए जाते हैं।
35	*Coccinia grandis Linn.*	पत्तियाँ, पुष्पक्रम, संपूर्ण पौधा	कुचली हुई पत्तियों को सब्जी में मिलाकर त्वचा रोगों और उपदंश के पारंपरिक उपचार में खाया जाता है। गिनी कृमि को बाहर निकालने में सहायता के लिए पुष्पक्रम का पुल्टिस लगाया जाता है। मधुमेह में रक्त शर्करा नियंत्रित करने के लिए संपूर्ण पौधे का चूर्ण उपयोग किया जाता है।

36	*Cocculus hirsutus (L.) Diels*	पत्तियाँ	श्वेत प्रदर में पत्तियों का काढ़ा चीनी के साथ एक सप्ताह तक सुबह लेने की परंपरा है।
37	*Corbichonia decumbens (Forssk.) Jacq. ex Exell*	पत्तियाँ, संपूर्ण पौधा	गुर्दे की पथरी में कुचली हुई पत्तियाँ ली जाती हैं। संपूर्ण पौधे का अर्क गोनोरिया में पारंपरिक रूप से उपयोग किया जाता है।
38	*Coriandrum sativum Linn.*	बीज	बीजों का काढ़ा सर्दी-खाँसी में लिया जाता है। लगभग 50 ग्राम बीज पानी में उबालकर तैयार किया गया घोल पेशाब संबंधी समस्याओं में उपयोग किया जाता है।
39	*Crateva magna (Lour.) DC.*	पत्तियाँ, छाल, जड़ें, बाहरी छाल	गिनी कृमि को निकालने में सहायता के लिए गर्म पत्तियाँ प्रभावित स्थान पर बाँधी जाती हैं। छाल का चूर्ण पानी के साथ पेट-दर्द, कब्ज और आमाशय संबंधी समस्याओं में लिया जाता है। जड़, पत्तियों और बाहरी छाल की तैयारियाँ सूजन, गर्दन के गठिया और बढ़ी हुई तिल्ली में उपयोग की जाती हैं। छाल को भूख बढ़ाने वाला, रेचक और सूजन कम करने वाला माना जाता है। गुर्दे की पथरी तथा गर्भपात से संबंधित लोक-उपयोग भी दर्ज हैं।
40	*Crotalaria burhia Buch.-Ham.*	जड़ें	पेट-दर्द में जड़ का चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लिया जाता है।
41	*Cuminum cyminum L.*	बीज	पेट-दर्द में सेंधा नमक और नींबू के रस के साथ बीजों का काढ़ा उपयोग किया जाता है।
42	*Curculigo orchioides Gaertn.*	संपूर्ण पौधा	पारंपरिक रूप से जननांग संबंधी विकारों में उपयोग किया जाता है।
43	*Curcuma longa*	प्रकंद	सर्दी-खाँसी में आधा चम्मच हल्दी का चूर्ण गर्म दूध के साथ सोने से पहले लिया जाता है।
44	*Cynodon dactylon (L.) Pers.*	पुष्पक्रम, फल, पत्तियाँ, जड़ें, संपूर्ण पौधा	पौधे का लेप एक्जिमा पर लगाया जाता है। पत्तियों का रस महिलाओं में अत्यधिक रक्तस्राव के लिए तथा नाक के माध्यम से देने की परंपरा में वर्णित है। गर्भाशय की गाँठों से संबंधित रक्तस्राव में भी इसका उल्लेख मिलता है। रक्तचाप नियंत्रित करने के लिए पौधे का रस प्रतिदिन लिया जाता है। जड़ों का अर्क रक्तस्रावी बवासीर में और संपूर्ण पौधे की तैयारियाँ दर्दयुक्त या कठिन पेशाब में उपयोग की जाती हैं।
45	*Cyperus rotundus Linn.*	कंद, जड़ें, प्रकंद	सूखे कंद का चूर्ण पेचिश, पीलिया और मूत्र संबंधी समस्याओं में उपयोग किया जाता है। जड़ का लेप घावों और साँप के काटने पर लगाया जाता है तथा पीलिया और आँतों की समस्याओं में भी इसका उल्लेख है। अनियमित मासिक धर्म में प्रकंद का रस पानी के साथ लिया जाता है।

46	*Dalbergia sissoo Roxb.*	पत्तियाँ, छाल	पत्तियों का रस मूत्र मार्ग की सूजन में उपयोग किया जाता है। पत्तियों का लेप पशुओं के दस्त में दिया जाता है। पत्तियों का काढ़ा और सूखी छाल का चूर्ण रक्तस्रावी बवासीर में पारंपरिक रूप से उपयोग किए जाते हैं।
47	*Datura metel Linn.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से जोड़ों की सूजन में उपयोग किया जाता है।
48	*Datura stramonium*	संपूर्ण पौधा, बीज, पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से अस्थमा और नेत्र-चिकित्सा संबंधी उपयोगों में इसका उल्लेख मिलता है। कुछ जनजातीय समुदाय अस्थमा के लिए इसके बीजों और पत्तियों का धूम्रपान करते हैं।
49	*Echinops echinatus Roxb.*	जड़ें, पत्तियाँ, पुष्पक्रम	काली खाँसी में जड़ का अर्क गुनगुने पानी के साथ लिया जाता है। अन्य तैयारियों में काढ़ा, चूर्ण और दूध-आधारित नुस्खे शामिल हैं। पारंपरिक उपयोगों में खाँसी, सर्दी, बुखार, अपच, हिस्टीरिया, यौन दुर्बलता, दाँतों के संक्रमण तथा प्रसव या प्रसव-वेदना में सहायता शामिल हैं। जड़ का चूर्ण पशुओं में जूँ, किलनी और घावों के लिए भी बताया गया है।
50	*Eclipta prostrata*	संपूर्ण पौधा	बालों के टॉनिक के रूप में तथा बढ़े हुए यकृत, बढ़ी हुई तिल्ली और त्वचा रोगों में पारंपरिक रूप से उपयोग किया जाता है।
51	*Ehretia aspera Linn.*	तने की छाल, फल, फल का गूदा, पत्तियाँ, छाल	तने की छाल का लेप जलने पर लगाया जाता है। इस पौधे की छाल को *Butea monosperma, Terminalia bellirica, Mangifera indica, Launaea coromandelica* और *Ziziphus rugosa* की छाल के साथ उबालकर तैयार काढ़ा बच्चों के पेचिश और दस्त में दिया जाता है। फल या गूदे का अर्क अपच, कब्ज और पेट की समस्याओं में उपयोग किया जाता है। मुँह के छालों में पत्तियाँ चबाई जाती हैं; पेशाब में कठिनाई के लिए पत्तियों का चूर्ण चीनी और बकरी के दूध के दही के साथ लिया जाता है।
52	*Eucalyptus camaldulensis Dehnm.*	पत्तियाँ	पत्तियों के तेल का उपयोग गले की खराश में गरारे करने के लिए किया जाता है।
53	*Euphorbia granulata Forsk.*	लेटेक्स	लेटेक्स फोड़ों पर लगाया जाता है।
54	*Euphorbia heterophylla Linn.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से पेट की समस्याओं और पेचिश में उपयोग किया जाता है।
55	*Euphorbia hirta Linn.*	पत्तियाँ, फल, जड़ें, संपूर्ण पौधा, लेटेक्स	श्वेत प्रदर में पारंपरिक उपयोग दर्ज है। जड़ का चूर्ण दस्त, रक्तस्राव और पेट में ऐंठन के लिए उपयोग किया जाता है।

			तंत्रिका संबंधी रक्तस्राव और तंत्रिकाओं की निष्क्रियता में लेटेक्स का उपयोग बताया गया है। संपूर्ण पौधे का लेप घावों और फोड़ों पर लगाया जाता है।
56	*Evolvulus alsinoides*	संपूर्ण पौधा	बुखार कम करने, स्मरण शक्ति बढ़ाने और अस्थमा में पारंपरिक रूप से उपयोग किया जाता है।
57	*Ferula asafoetida Linn.*	लेटेक्स	पेट-दर्द में हींग के चूर्ण को पानी के साथ पेट पर मालिश किया जाता है तथा मौखिक रूप से भी लिया जाता है। दाँत-दर्द के स्थान पर भुनी हुई हींग लगाने की परंपरा है।
58	*Ficus benghalensis Linn.*	वायवीय जड़ें, जड़ें, तने की छाल, लेटेक्स	वायवीय जड़ों का उपयोग स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। अपस्थानिक जड़ों के सिरों को गाय के दूध में उबालकर छना हुआ काढ़ा बवासीर में लिया जाता है। छाल को काली मिर्च के साथ साँप के काटने के पारंपरिक उपचार में तथा लेटेक्स को गठिया में उपयोग किया जाता है।
59	*Ficus glomerata Roxb.*	लेटेक्स	श्वसन तंत्र और फेफड़ों की समस्याओं में लेटेक्स को अजवाइन, जायफल, लौंग और गुड़ के साथ मिलाकर देने की परंपरा है।
60	*Ficus religiosa L.*	पत्तियाँ, तने की गाँठें, फल, छाल, बीज	तने की सूखी गाँठों का चूर्ण पानी के साथ कब्ज में लिया जाता है। परिपक्व हरी पत्तियों का काढ़ा हृदय रोग में अलग-अलग खुराकों में दिया जाता है। पत्तियों, फलों, छाल और बीजों का पारंपरिक उपयोग गर्भधारण रोकने तथा सूजनयुक्त अल्सर में भी दर्ज है।
61	*Grewia tiliifolia Vahl.*	छाल	पारंपरिक रूप से मानसिक रोगों में उपयोग किया जाता है।
62	*Hemidesmus indicus R.Br.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से पेट संबंधी विकारों में उपयोग किया जाता है।
63	*Indigofera cordifolia Linn.*	पत्तियाँ, बीज	बीजों को पानी में उबालकर छना हुआ तरल टाइफाइड के रोगियों को तीन दिनों तक देने की परंपरा है। भील और गरासिया समुदाय मसूड़ों की सूजन में पत्तियाँ चबाते हैं। गले में जकड़न या बलगम संबंधी समस्याओं में बीजों का चूर्ण और पत्तियों का काढ़ा लिया जाता है।
64	*Jasminum angustifolium Vahl.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से दस्त में उपयोग किया जाता है।
65	*Jatropha curcas Linn.*	छाल, लेटेक्स, पत्तियाँ, बीज, बीज का तेल	गर्भावस्था के दौरान पेट संबंधी समस्याओं में छाल और लेटेक्स का पारंपरिक उपयोग दर्ज है। पत्तियाँ पेचिश और पेट में मरोड़ के लिए तथा स्तन-दूध बढ़ाने के लिए उपयोग की जाती हैं। बीज और उनका तेल रेचक के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

66	*Lantana camara Linn.*	पत्तियाँ	घाव भरने में सहायता के लिए पारंपरिक रूप से उपयोग किया जाता है।
67	*Lantana whitiana Wall.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से त्वचा रोगों में उपयोग किया जाता है।
68	*Launaea pinnatifida Cass.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से बुखार में उपयोग किया जाता है।
69	*Launaea procumbens Linn.*	पत्तियाँ, संपूर्ण पौधा	पत्तियों का लेप बवासीर में लगाया जाता है और उनका अर्क तीव्र पेचिश में लिया जाता है। भील और डामोर समुदाय पशुओं के थनों की सूजन पर पौधे का लेप लगाते हैं।
70	*Lawsonia inermis Linn.*	बीज, पत्तियाँ	श्लेष्मा युक्त पेचिश में बीजों का चूर्ण घी में मिलाकर छोटी गोलियाँ बनाई जाती हैं और दिन में दो बार ली जाती हैं। बीजों का उपयोग बवासीर में भी होता है। पत्तियों का लेप जलने, मुँहासों, फोड़ों, घावों और अंगूठे की सूजन पर लगाया जाता है। शुक्रप्रमेह में पत्तियों का रस चीनी के साथ लिया जाता है। अन्य लोक-उपयोगों में आँखों की सूजन, खाँसी, उल्टी, सूजन, पक्षाघात, नाक से खून आना और जलन शामिल हैं। सूजी हुई जगह पर गर्म पत्तियाँ बाँधी जाती हैं।
71	*Leptadenia pyrotechnica (Forsk.) Decne.*	कोमल टहनियाँ, तना, पत्तियाँ	घाव भरने के लिए तने और पत्तियों की तैयारियाँ उपयोग की जाती हैं। अजवाइन और तिल के तेल के साथ तने के टुकड़ों को उबालकर अपरा (प्लेसेंटा) बाहर निकालने में सहायता के लिए देने की परंपरा है। जोड़ों की गतिशीलता बनाए रखने के लिए उबला हुआ तना भेड़ों को दिया जाता है।
72	*Leucas aspera Spreng.*	गर्म पत्तियाँ, पत्तियों का लेप, जड़ का लेप, पुष्पक्रम, संपूर्ण पौधे का धुआँ	पारंपरिक उपयोगों में बुखार, दर्दयुक्त सूजन, सिरदर्द, माइग्रेन, पेट-दर्द, आमाशय संबंधी समस्याएँ, एक्जिमा, मस्से, कुष्ठ रोग, सोरायसिस, पुराने त्वचा रोग, साँप का काटना और चेचक शामिल हैं। स्रोत में इसके कवकरोधी, एंटीऑक्सीडेंट और सूक्ष्मजीवरोधी गुणों का भी उल्लेख है।
73	*Litsea glutinosa (Lour.) C.B.Rob.*	छाल	भेड़ के दूध में तैयार छाल का लेप फ्रैक्चर और सूजे हुए स्थानों पर लगाया जाता है।
74	*Mangifera indica Linn.*	बीज	आम की गुठली का गूदा पीसकर पानी या दही में मिलाकर बच्चों को दस्त में दिया जाता है। इसकी छाल अन्य पौधों की छाल के साथ तैयार किए जाने वाले उस पारंपरिक काढ़े में भी शामिल है, जिसका उपयोग बच्चों के पेचिश और दस्त में बताया गया है।

75	*Martynia annua Linn.*	पत्तियाँ	पत्तियों का लेप गठिया, सूजन और फोड़ों पर लगाया जाता है।
76	*Melilotus indica Linn.*	पत्तियाँ, संपूर्ण पौधा	गरासिया समुदाय खुजली में पत्तियों को त्वचा पर रगड़ते हैं। शुरुआती त्वचा संक्रमण या चकत्तों पर पत्तियों का लेप नींबू के रस के साथ लगाया जाता है। शरीर-दर्द में संपूर्ण पौधे का काढ़ा लिया जाता है।
77	*Mimosa hamata*	बीज, पत्तियाँ, फूल	बीजों का चूर्ण, ताजी पत्तियों का रस और फूलों का चूर्ण पुरुषों की यौन दुर्बलता, घावों और अल्सर से रक्तस्राव, दस्त, पेचिश, बच्चों में ब्रोंकाइटिस, श्वेत प्रदर तथा अत्यधिक मासिक रक्तस्राव के पारंपरिक उपचारों में उपयोग किए जाते हैं।
78	*Moringa oleifera*	पत्तियाँ, जड़ें, छाल, फूल, बीज, बीज का तेल, फलियाँ	पारंपरिक रूप से जोड़ों की सूजन, गठिया, घाव, साँप या कुत्ते के काटने, अपच, दस्त, बुखार, बच्चों के पेट-दर्द, मासिक धर्म के दर्द, स्कर्वी, मधुमेह, कब्ज और तिल्ली संबंधी विकारों में उपयोग किया जाता है। फूलों को टॉनिक, मूत्रवर्धक तथा पित्त-स्राव बढ़ाने वाला माना जाता है।
79	*Mukia maderaspatana Linn.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से अस्थमा में उपयोग किया जाता है।
80	*Nelumbo nucifera Gaertn.*	बीज	उल्टी के लिए 4–5 बीजों को थोड़े नमक, 2–3 काली मिर्च के दानों और नींबू के रस के साथ मिलाकर देने की परंपरा है।
81	*Nerium oleander*	जड़ें, जड़ की छाल, पत्तियाँ	पानी के साथ तैयार जड़ का लेप अल्सर, कुष्ठ रोग और बवासीर में लगाया जाता है। पत्तियों और जड़ की छाल का लेप त्वचा रोगों में उपयोग किया जाता है। स्रोत में गर्भपात कराने के लिए जड़ के उपयोग का भी उल्लेख है।
82	*Ocimum basilicum Linn.*	बीज, पत्तियाँ	अंकुरित बीजों को दही में मिलाकर मूत्र संबंधी समस्याओं में दिया जाता है। पत्तियों का उपयोग अस्थमा और अन्य श्वसन समस्याओं में पारंपरिक रूप से किया जाता है।
83	*Ocimum sanctum Linn.*	फूल, पत्तियाँ	सर्दी-खाँसी में 5–6 फूलों का काढ़ा गुड़ और हल्दी के साथ सोने से पहले लिया जाता है। पत्तियों का लेप एक्जिमा पर लगाया जाता है।
84	*Opuntia ficus-indica (L.) Mill.*	फल, पत्तियाँ	अस्थमा और काली खाँसी में भुना हुआ फल या फलों की चाशनी उपयोग की जाती है। गर्मी, सूजन और अल्सर वाले स्थानों पर पत्तियों का गूदा पुल्टिस के रूप में लगाया जाता है।

85	*Pedalium murex Linn.*	फल, बीज, पत्तियाँ, संपूर्ण पौधा	फलों का काढ़ा मूत्रवर्धक के रूप में उपयोग किया जाता है। जोड़ों के दर्द और कमर-दर्द में बीजों से बने लड्डू दिए जाते हैं। अन्य पारंपरिक उपयोगों में शुक्रप्रमेह, पेशाब में कठिनाई, गोनोरिया, उपदंश, नपुंसकता, यौन दुर्बलता, शरीर-दर्द, सूजन और गठिया शामिल हैं।
86	*Peganum harmala*	सूखा संपूर्ण पौधा, पत्तियाँ, बीज, जड़ें	पारंपरिक तैयारियों में पौधे का धुआँ, पत्तियों का काढ़ा, बीजों का चूर्ण तथा सरसों या तिल के तेल में जड़ या बीज का लेप शामिल हैं। इनका उपयोग दाँत-दर्द, गठिया, आंतों के कृमि, जूँ, कान-दर्द, पीलिया, बुखार, मासिक धर्म के दर्द, पेट में ऐंठन, पित्ताशय की पथरी, अस्थमा और हिस्टीरिया में बताया गया है। गर्भपात कराने के लिए उपयोग का उल्लेख भी मिलता है।
87	*Pergularia daemia Linn.*	कोमल पत्तियाँ, पत्तियों का रस, जड़ की छाल, फलियाँ	गिनी कृमि से जुड़ी सूजन पर कोमल पत्तियों का लेप लगाया जाता है। सीने में जलन और मूत्र अवरोध में पत्तियों का रस उपयोग किया जाता है; इसे बलगम निकालने वाले उपाय तथा अस्थमा और गठिया में भी वर्णित किया गया है। जड़ की छाल का उल्लेख आंतों की चिकनी मांसपेशियों और रक्तचाप से संबंधित उपयोगों में मिलता है। कुचली हुई फलियाँ पशुओं के बाहरी परजीवियों और खुरपका-मुँहपका रोग के लिए उपयोग की जाती हैं, जबकि पत्तियों का काढ़ा पशुओं के बुखार में दिया जाता है।
88	*Phoenix dactylifera Linn.*	फल	सर्दी-खाँसी में पाँच से छह सूखे खजूर दूध में उबालकर सोने से पहले लेने की परंपरा है।
89	*Phyllanthus amarus Schumach. & Thonn.*	जड़ें, फल	पारंपरिक रूप से यकृत संबंधी समस्याओं में उपयोग किया जाता है।
90	*Phyllanthus emblica*	फल	हृदय संबंधी समस्याओं में सूखे फल का चूर्ण मिश्री के साथ पानी में मिलाकर लिया जाता है। श्वेत प्रदर में शहद में भिगोए हुए फल मौखिक रूप से लेने की परंपरा है।
91	*Physalis minima L.*	फल	पके फल जलोदर, कब्ज, बढ़ी हुई तिल्ली और पेट में ऐंठन के लिए दिए जाते हैं।
92	*Piper longum Linn.*	फल	बुखार संबंधी शिकायतों में फलों को रात भर घी में भिगोकर थोड़ा नमक डालकर भूनने और चबाने की परंपरा है।
93	*Plumbago zeylanica Linn.*	जड़ें	पारंपरिक रूप से बवासीर में उपयोग किया जाता है।

94	*Polygonum plebeium R. Br.*	संपूर्ण पौधा	पेट में ऐंठन के लिए पौधे का काढ़ा दिया जाता है। एक्जिमा पर पौधे की राख तेल में मिलाकर लगाई जाती है।
95	*Portulaca oleracea L.*	लेटेक्स	बिच्छू के डंक से प्रभावित स्थान पर लेटेक्स लगाया जाता है।
96	*Prosopis cineraria (L.) Druce*	संपूर्ण पौधा, फूल, पुष्पक्रम, छाल	गर्भपात रोकने के पारंपरिक उपाय के रूप में फूलों का चूर्ण चीनी के साथ लिया जाता है। पिसे हुए पुष्पक्रम को चीनी और पानी के साथ मिलाकर फोड़े तथा त्वचा रोगों में उपयोग किया जाता है। सूखी छाल और उसका लेप गठिया के दर्द में प्रयुक्त होता है। घावों और मधुमेह के पारंपरिक उपचारों में भी इस पौधे का उल्लेख है।
97	*Psoralea corylifolia Linn.*	बीज	श्वित्र (ल्यूकोडर्मा) के पारंपरिक उपचार में एक चम्मच बीजों को सूखे आँवले के चूर्ण और मिश्री के साथ एक गिलास पानी में 5–6 घंटे भिगोकर सुबह जल्दी लेने की परंपरा है।
98	*Ricinus communis L.*	बीज, पत्तियाँ, लेटेक्स, बीज का तेल	गुर्दे की समस्याओं के लिए छिलका उतारे हुए चार बीजों को एक लीटर दूध में तब तक उबालने का उल्लेख है, जब तक दूध 150 मिलीलीटर न रह जाए; इसे शाम को चार दिनों तक लेने की परंपरा है। दर्द में सरसों का तेल लगी गर्म पत्तियाँ घुटने पर बाँधी जाती हैं। लेटेक्स रेचक के रूप में तथा बीज का तेल गठिया और जोड़ों के दर्द में उपयोग किया जाता है।
99	*Saccharum officinarum Linn.*	तना	सर्दी-खाँसी में सूखी अदरक, लौंग, तुलसी की पत्तियाँ, चायपत्ती, गुड़ और दूध से बनी चाय सोने से पहले ली जाती है। पीलिया में गन्ने का रस दिया जाता है।
100	*Salvadora persica Linn.*	छाल, पत्तियाँ, जड़ें	छाल की राख का उपयोग दंतमंजन के रूप में किया जाता है। पत्तियों का रस रेचक तथा स्कर्वी में उपयोग होता है। गठिया में गर्म पत्तियों को पतले सूती कपड़े में लपेटकर प्रभावित स्थान पर रखा जाता है। त्वचा की जलन पर पत्तियों का लेप लगाया जाता है और बुखार में जड़ों का काढ़ा उपयोग किया जाता है।
101	*Sarcostemma viminale (L.) R. Br.*	संपूर्ण पौधा	पाचन संबंधी विकारों में पौधे का अर्क लिया जाता है। फ्रैक्चर वाली हड्डियों पर पौधे का लेप लगाया जाता है।

102	*Senna alexandrina Mill.*	पत्तियाँ	पत्तियों और सिरके के साथ बने पत्तियों के लेप का उपयोग कब्ज, मधुमेह, आंतों के कृमि, अपच, पीलिया, गठिया, गाउट, खाँसी, सर्दी, ब्रोंकाइटिस, एनीमिया, टाइफाइड और त्वचा संबंधी समस्याओं के पारंपरिक उपचारों में बताया गया है। इसे रेचक के रूप में भी उपयोग किया जाता है।
103	*Senna tora (L.) Roxb.*	जड़ें, पत्तियाँ, बीज, फूल	जड़ का लेप साँप के काटने और बिच्छू के डंक पर लगाया जाता है। पौधे का अल्कोहलीय अर्क दाद में उपयोग किया जाता है। पत्तियों और बीजों के काढ़े त्वचा रोगों में तथा ताजी पत्तियों का अर्क वजन घटाने के पारंपरिक उपाय के रूप में वर्णित है। बीजों की चाय अस्थमा और ब्रोंकाइटिस में तथा बीजों का लेप आंतों के कृमि में उपयोग किया जाता है। दही के साथ किण्वित बीज फोड़े, घाव और त्वचा रोगों पर लगाए जाते हैं। पत्तियों और फूलों का पुल्टिस खुजली तथा गठिया में उपयोग किया जाता है।
104	*Sesamum indicum L.*	बीज	गुर्दे और मूत्र संबंधी समस्याओं में तिल के बीजों का चूर्ण और गुड़ का चूर्ण समान मात्रा में मिलाकर सोने से पहले लिया जाता है।
105	*Sesbania sesban*	कोमल टहनियाँ, बीज	पारंपरिक रूप से बालों की वृद्धि तथा शरीर में गर्मी से जुड़ी समस्याओं में उपयोग किया जाता है।
106	*Sida acuta Burm.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से फोड़े और त्वचा पर चकत्तों में उपयोग किया जाता है।
107	*Sida cordifolia*	बीज, पत्तियाँ, फूल, अपरिपक्व फल, जड़ें	सर्दियों में कमर-दर्द के लिए बीजों का चूर्ण गुड़ के साथ खाया जाता है। अन्य तैयारियों में पत्तियों का लेप और रस, फूलों तथा कच्चे फलों का लेप और जड़ों का काढ़ा, चूर्ण तथा रस शामिल हैं। इनका पारंपरिक उपयोग घाव, दस्त, दर्दयुक्त पेशाब, लू, बुखार, यौन दुर्बलता, श्वेत प्रदर, तंत्रिका संबंधी विकार, चेहरे का लकवा, गोनोरिया, पेट-दर्द और आँखों के रोगों में बताया गया है।
108	*Solanum indicum Linn.*	फल	पारंपरिक रूप से आंतों के कृमि निकालने के लिए उपयोग किया जाता है।
109	*Solanum nigrum Linn.*	पत्तियाँ, जड़ें, फल	पारंपरिक रूप से मुँह के छालों में उपयोग किया जाता है। प्रजनन क्षमता बढ़ाने के लोक-उपाय के रूप में थोड़ी चीनी के साथ उबली हुई जड़ महिलाओं को दी जाती है। फलों का उपयोग बुखार, दस्त और आँखों के रोगों में किया जाता है।

110	*Solanum surattense Burm. f.*	पत्तियाँ	कान से कीड़े निकालने के लिए ताजी पत्तियों का अर्क कान में डालने की परंपरा है।
111	*Tecomella undulata (Sm.) Seem.*	जड़ें, जड़ की छाल, तना, तने की छाल, छाल	कान-दर्द में ताजी जड़ के अर्क की कुछ बूँदें कान में डाली जाती हैं। तने की छाल का लेप उपदंश में उपयोग किया जाता है। श्वेत प्रदर में चीनी के साथ तने का काढ़ा तथा चीनी या शहद और दूध के साथ जड़ की छाल का चूर्ण लिया जाता है। एक्जिमा और त्वचा पर चकत्तों में छाल का लेप तथा फफोलों पर सरसों के साथ जड़ का लेप लगाया जाता है। मधुमेह में छाल का चूर्ण उपयोग किया जाता है।
112	*Terminalia arjuna Roxb.*	छाल	हृदय रोग के पारंपरिक उपचार में छाल का चूर्ण घी या दूध के साथ दिन में दो या तीन बार, 15 दिनों तक देने का उल्लेख है।
113	*Terminalia bellirica Roxb.*	छाल, जड़ें	पारंपरिक रूप से त्वचा रोगों में उपयोग किया जाता है। इसकी छाल बच्चों के पेचिश और दस्त में उपयोग किए जाने वाले बहु-पादप काढ़े में भी शामिल है।
114	*Terminalia catappa Linn.*	पत्तियाँ	कोमल पत्तियों का लेप एक्जिमा से प्रभावित त्वचा पर लगाया जाता है।
115	*Terminalia chebula Retz.*	फल	पाचन संबंधी विकारों में हल्का भुना हुआ फल-चूर्ण एक चम्मच की मात्रा में पानी के साथ लिया जाता है।
116	*Tinospora cordifolia*	तना	तेज बुखार और पीलिया में तने का रस अकेले या शहद के साथ लिया जाता है। अस्थमा में तने का रस शहद के साथ तथा श्वेत प्रदर में पाँच काली मिर्च के दानों के साथ तने का लेप उपयोग किया जाता है।
117	*Trianthema decandra Linn.*	जड़ें	पारंपरिक रूप से हाथीपाँव (फाइलेरियासिस) में उपयोग किया जाता है।
118	*Tribulus terrestris L.*	फल	मूत्रमार्ग से स्राव, शुक्रप्रमेह और नपुंसकता के पारंपरिक उपचार में 18 ग्राम फल-चूर्ण को चीनी और काली मिर्च के साथ लेने का उल्लेख है।
119	*Tridax procumbens Linn.*	पत्तियाँ	घावों और कटने पर पत्तियों का रस स्थानीय रूप से लगाया जाता है, जिससे रक्तस्राव रोकने और घाव भरने में सहायता मिलने की पारंपरिक मान्यता है।
120	*Trigonella foenum-graecum Linn.*	बीज	यकृत संबंधी समस्याओं और मधुमेह में सूखे बीजों का एक चम्मच चूर्ण सुबह पानी के साथ प्रतिदिन लिया जाता है। हड्डियों से संबंधित समस्याओं में भी बीजों के चूर्ण का पारंपरिक उपयोग दर्ज है।

121	*Triticum aestivum L.*	बीज	आटे की रोटी को एक ओर से सेंककर आधे पके भाग पर घी, हल्दी और गुड़ लगाया जाता है। इसे गाँठ पर बाँधने की परंपरा है, ताकि उसमें मवाद बनने में सहायता मिले।
122	*Withania somnifera (L.) Dunal*	जड़ें, पत्तियाँ	पुरुषों में बाँझपन के लिए जड़ का काढ़ा दूध के साथ लिया जाता है। श्वेत प्रदर और बार-बार गर्भपात होने की स्थिति में जड़ का काढ़ा या चूर्ण उपयोग किया जाता है। त्वचा रोगों में गोमूत्र के साथ जड़ का लेप तथा फोड़ों पर कुचली हुई पत्तियाँ लगाई जाती हैं। घुटने के दर्द में भी जड़ों की तैयारियों का उल्लेख है।
123	*Zaleya govindia*	जड़ें	उपदंश तथा जननांगों की सूजन के लिए पुरुषों द्वारा ताजी जड़ों का काढ़ा लेने की परंपरा है।
124	*Zingiber officinale Rosc.*	प्रकंद	सर्दी-खाँसी में ताजे प्रकंद का रस एक-एक चम्मच दिन में तीन बार शहद के साथ लिया जाता है। पेट-दर्द में अदरक का चूर्ण थोड़े नमक के साथ पानी में मिलाकर लिया जाता है।
125	*Ziziphus mauritiana Linn.*	पत्तियाँ	पारंपरिक रूप से लकवे में उपयोग किया जाता है।
126	*Ziziphus nummularia*	जड़ें, जड़ की छाल, तना, छाल, पत्तियाँ	दाँतों और मसूड़ों की समस्याओं में कुल्ला करने के लिए जड़ों का काढ़ा उपयोग किया जाता है; इसे बुखार में भी लिया जाता है। पत्तियों का लेप फोड़ों पर तथा जड़ का लेप पुराने घावों और अल्सर पर लगाया जाता है। जड़ की छाल का रस गठिया में लगाया जाता है। दस्त में तने और छाल का चूर्ण तथा सूजन पर घी में मिलाई गई छाल की राख उपयोग की जाती है।

4. निष्कर्ष: -

अध्ययन क्षेत्र में दर्ज 126 औषधीय पादप प्रजातियों के पारंपरिक उपयोगों से संबंधित निष्कर्ष राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए पूर्ववर्ती जातीय-वनस्पति अध्ययनों से व्यापक समानता प्रदर्शित करते हैं। कटेवा एवं गलाव (2005) ने शेखावाटी क्षेत्र में विभिन्न रोगों के पारंपरिक उपचार में औषधीय पौधों की उपयोगिता को रेखांकित किया। इसी प्रकार, महेश्वरी एवं ढाका (2026) ने झुंझुनूं, सीकर और चूरू जिलों में बड़ी संख्या में औषधीय पादप प्रजातियों के पारंपरिक उपयोगों का विवरण प्रस्तुत किया। वर्तमान अध्ययन में भी 126 प्रजातियों के पारंपरिक औषधीय उपयोगों का अभिलेखन किया गया, जो क्षेत्रीय समुदायों में वनस्पति संसाधनों से जुड़े पारंपरिक ज्ञान की निरंतरता को दर्शाता है।

जातीय-औषधीय उपयोगों के संदर्भ में वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों से विशेष समानता प्रदर्शित करते हैं। शर्मा एवं चक्रवर्ती (2020) ने टोंक जिले में 147 पादप प्रजातियों के अध्ययन में अधिकांश प्रजातियों के एक से अधिक रोगों के पारंपरिक उपचार में उपयोग की जानकारी दी। इसी प्रकार, करेल एवं परिहार (2021) ने टोंक जिले में 95 औषधीय पादप प्रजातियों के उपयोगों का अभिलेखन किया तथा विभिन्न पादप भागों के औषधीय प्रयोगों को रेखांकित किया। वर्तमान अध्ययन में भी पत्तियों,

जड़ों, तनों, छाल, फूलों, फलों और बीजों सहित विभिन्न पादप भागों के औषधीय उपयोग दर्ज किए गए। इससे स्पष्ट होता है कि स्थानीय पारंपरिक चिकित्सा में पौधे के विभिन्न भागों का उपयोग स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है।

वर्तमान अध्ययन में पाचन संबंधी समस्याओं, त्वचा विकारों, श्वसन संबंधी परेशानियों तथा मूत्र संबंधी समस्याओं के पारंपरिक उपचार में प्रयुक्त प्रजातियों का अभिलेखन किया गया। यह प्रवृत्ति कटेवा एवं गलाव (2005) के निष्कर्षों से मेल खाती है, जिन्होंने त्वचा, पाचन, श्वसन, यकृत तथा मूत्र तंत्र से संबंधित विकारों के उपचार में प्रयुक्त पौधों का विवरण दिया। शर्मा एवं सोआन (2020) ने भी भरतपुर जिले में त्वचा संबंधी समस्याओं के उपचार में प्रयुक्त औषधीय पौधों को प्रमुखता से दर्ज किया। इसी प्रकार, देवड़ा एवं झाला (2016) ने राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों में पारंपरिक उपचारकर्ताओं द्वारा विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के लिए प्रयुक्त पादप-आधारित औषधीय उपयोगों का अभिलेखन किया। इन अध्ययनों के साथ वर्तमान निष्कर्षों की समानता दर्शाती है कि राजस्थान के विभिन्न समुदायों में औषधीय पौधों का उपयोग अनेक प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं के पारंपरिक उपचार में किया जाता है।

वर्तमान अध्ययन में औषधीय पौधों के उपयोग के लिए चूर्ण, काढ़ा, रस, अर्क, लेप तथा अन्य पारंपरिक तैयारियों का विवरण भी दर्ज किया गया। राणा एवं सहलेखक (2014) ने बाँसवाड़ा जिले के घाटोल-पीपलखूंट क्षेत्र में विभिन्न पादप भागों के प्रत्यक्ष उपयोग तथा पारंपरिक औषधीय तैयारियों में उनके प्रयोग को दर्ज किया। देवड़ा एवं झाला (2016) ने भी विभिन्न सामान्य रोगों के उपचार में प्रयुक्त पादप-आधारित औषधीय योगों का विवरण प्रस्तुत किया। ये निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन में दर्ज पारंपरिक तैयारियों की विविधता के अनुरूप हैं और दर्शाते हैं कि स्थानीय औषधीय ज्ञान केवल पौधों के चयन तक सीमित न होकर उनके उपयुक्त भागों तथा उपयोग की विशिष्ट तैयारियों से भी जुड़ा हुआ है।

पारंपरिक औषधीय ज्ञान के संरक्षण के संदर्भ में भी वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष पूर्ववर्ती शोधों से समानता रखते हैं। कटेवा एवं गलाव (2005) ने औषधीय प्रजातियों के संरक्षण की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित किया, जबकि सैनी एवं चौहान (2019) तथा करेल एवं परिहार (2021) ने पारंपरिक वनस्पति ज्ञान के दस्तावेजीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। महेश्वरी एवं ढाका (2026) ने भी पारंपरिक ज्ञान एवं औषधीय वनस्पति संसाधनों के संरक्षण से संबंधित चुनौतियों को रेखांकित किया। वर्तमान अध्ययन में 126 औषधीय पादप प्रजातियों तथा उनके प्रयुक्त पादप भागों, पारंपरिक उपयोगों एवं तैयारियों का व्यवस्थित अभिलेखन इस स्थानीय औषधीय ज्ञान के दस्तावेजीकरण में योगदान देता है।

समग्र रूप से, वर्तमान अध्ययन के निष्कर्ष राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए पूर्ववर्ती जातीय-वनस्पति अध्ययनों के अनुरूप हैं। विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार में औषधीय पौधों का उपयोग, पौधों के विभिन्न भागों का चयन तथा चूर्ण, काढ़ा, रस, लेप और अन्य पारंपरिक तैयारियों का प्रयोग वर्तमान अध्ययन में भी प्रमुख रूप से सामने आया। अध्ययन क्षेत्र में दर्ज 126 प्रजातियों के औषधीय उपयोगों का यह दस्तावेजीकरण स्थानीय पारंपरिक ज्ञान को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है तथा भविष्य में इसके संरक्षण और वैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए आधार प्रदान करता है। हालांकि, पारंपरिक उपयोगों की समानता किसी पौधे की चिकित्सीय प्रभावकारिता या सुरक्षा की वैज्ञानिक पुष्टि नहीं करती; इसके लिए स्वतंत्र औषधीय एवं विषविज्ञान संबंधी परीक्षण आवश्यक हैं।

संदर्भ सूची: -

1. कटेवा, एस. एस., & गलाव, पी. के. (2005). Traditional herbal medicines from Shekhawati region of Rajasthan. *Indian Journal of Traditional Knowledge, 4*(3), 237–245.
2. करेल, ए., & परिहार, एस. (2020). An ethno-botanical study of medicinal plants of Tonk district. *Journal of Phytological Research, 34(*2), 149–157.
3. देवड़ा, जी. एस., & झाला, जी. पी. एस. (2016). Studies on ethnomedicine and role of traditional health practitioners (THPs) in primary health care systems (PHCs) in the tribal dominated areas of Rajasthan, India. *International Journal of Pharmacognosy, 3(*8), 359–370.
4. माहेश्वरी, आर., & ढाका, ए. (2026). Documentation and taxonomic analysis of traditional medicinal plants used by rural communities in the Shekhawati region of Rajasthan. *International Journal of Technology and Applied Science, 17*(2), 1–11.

5. राणा, एस., शर्मा, डी. के., & पालीवाल, पी. पी. (2014). A note on the ethno-medicinal properties of some plants used by the tribal and rural community in Ghatol area of District Banswara of South Rajasthan, India. *Research Journal of Medicinal Plant, 8*(6), 246–257.
6. शर्मा, ए., & सोअन, पी. (2020). Survey of medicinal plants among the rural people of Bharatpur district, Rajasthan, used in skin disease. *Advances in Plant Sciences, 33*(1–2), 181–183.
7. शर्मा, एस., & चक्रवर्ती, डी. (2021). Traditional medicinal plants used by tribal communities in Tonk district, Rajasthan. *Plant Science Today, 8*(1), 225–228.
8. सैनी, टी. सी., & चौहान, एस. एस. (2019). Traditional herbal medicines of Shakambhari Conservation Reserve, Rajasthan (India). *International Journal of Research and Analytical Reviews, 6*(1), 276–293.